

मानव द्वारा प्राकृतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण

श्रीमती मोनिका कुशवाहा

सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, ठाकुर हर नारायण सिंह विधि महाविद्यालय, प्रयागराज

सार

पर्यावरण को भौतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक तीनों रूपों में देखा जाता है, जिसके अधीन जीव व समस्त मानव जाति रहते हैं। वे सभी विभिन्न संसाधनों को प्राप्त करने के भिन्न-भिन्न तरीके अपनाते रहते हैं। प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग हेतु मानव लगातार प्रकृति से छेड़छाड़ कर रहा है, जिसका दुष्परिणाम समस्त मानव जाति को भुगतना होगा। प्रकृति हमारे शारीरिक स्वास्थ्य में वृद्धि के साथ-साथ हमारा मानसिक स्वास्थ्य भी उत्तम रखती है क्योंकि मस्तिष्क के स्वस्थ होने से ही जन कल्याण सम्भव है। प्रकृति हमें तनावमुक्त रहने में हमारी सहायता करती है। हमें प्रकृति माँ से किसी भी तरह की छेड़छाड़ नहीं करनी चाहिए तथा प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने में अपना योगदान अवश्य देना चाहिए। यह संतुलन तभी बना रहेगा जब भौतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक तीनों ही वातावरण शुद्ध होंगे। मानव निर्मित वातावरण का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। साथ ही, भौतिक पर्यावरण, जिसे हम आमतौर पर सामाजिक पर्यावरण ही कहते हैं, इसका भी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है। हमें मानव जीवन की रक्षा के लिए प्रकृति का संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है और इसके लिए विश्व स्तर पर एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है। यह शोध पर्यावरण तथा मानव जीवन के बीच संबंध पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव तथा वैचारिक समस्याओं को रेखांकित करता है, साथ ही सामाजिक सम्बन्ध को सुदृढ़ बनाए रखने में प्रकृति का क्या योगदान रहता है, इसकी भी समीक्षा करता है।

मुख्य शब्द: पर्यावरण, समाज, संस्कृति, भौतिक, प्रभाव, दुष्परिणाम।

प्रस्तावना

पर्यावरण हमारे आस-पास पाया जाने वाला सामाजिक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक वातावरण है। सामाजिक पर्यावरण से तात्पर्य मनुष्यों के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों से है तथा सांस्कृतिक पर्यावरण से तात्पर्य धर्म, प्रथा, परम्परा, रीति-रिवाजों आदि से है। प्राकृतिक पर्यावरण में पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, जल, वनस्पति, धरती आदि आते हैं। इन सभी प्रकार के वातावरण में एक सम्बन्ध होता है जिनसे ये सन्तुलित होते हैं। परन्तु मानव ने आज 21वीं सदी में विकास को इतना अधिक महत्व दे दिया है कि उसने प्रकृति की सुन्दरता को झकझोर दिया है। विकास की यह तीव्र गति तथा प्रौद्योगिकी की ओर उन्मुख भारतवासी यह भूल रहे हैं कि वातावरण इस वैज्ञानिक उन्नति से प्रभावित होकर प्रदूषित हो रहा है। इससे जल, थल ही प्रदूषित नहीं हो रहे बल्कि इससे अंतरिक्ष भी प्रभावित हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व प्रभावित हो रहा है। वर्ष 1972 में स्टॉकहोम में पर्यावरण पर आयोजित प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में एक मत से सभी ने पर्यावरण संरक्षण को मानवता की आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया। इस प्रकार बहुत सारे सम्मेलन हुए, जिनका लक्ष्य खतरनाक कचरे के उचित प्रबंधन, स्वच्छ जल, ऊर्जा प्रयोग में कुशलता बढ़ाने तथा पर्यावरण को क्षति पहुँचाए

बिना किस प्रकार विकास हो, इस बात पर सहमति दर्ज करना था; परन्तु देखना यह है कि विकास की इस दौड़ में यह प्रावधान कहीं मृग-मरीचिका बनकर न रह जाए। हमें इस बात का ध्यान रखना होगा कि पर्यावरण अर्थात् प्रकृति की रक्षा करने का दायित्व सभी भारतवासियों पर होना चाहिए, न कि कुछ दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने तक ही सीमित रहना चाहिए। जब तक यह विचार सिर्फ और सिर्फ दस्तावेजों तक ही सीमित रहेगा, तब तक पर्यावरण की रक्षा करना असम्भव है।

विश्लेषण

पर्यावरण हमारे चारों तरफ पाया जाने वाला वातावरण है जो हमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। पर्यावरण में सन्तुलन का होना बहुत आवश्यक है अन्यथा इसके दुष्परिणाम की कल्पना कर पाना असम्भव है। वर्तमान पर्यावरण के दुष्परिणाम विश्व की ज्वलंत समस्या बनते जा रहे हैं, जिसके कारण मानव-जाति का सम्पूर्ण विनाश सम्भव है। महात्मा गांधी ने कहा था कि—

"प्रकृति के पास सभी की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन हैं, परन्तु किसी के लालच की पूर्ति के लिए नहीं।"

अर्थात्, यदि केवल मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति की बात हो तो प्रकृति सबकी आवश्यकताएं पूरी कर सकती है। परन्तु जब कुछ लोगों के लालच की बात आती है तो प्रकृति विफल हो जाती है। ये लालची लोग प्रकृति का दोहन करके प्राकृतिक सम्पदा से भौतिक सुख-सुविधा के साधन व भौतिक धन एकत्र करने लगते हैं, जिससे मूल आवश्यकताओं की पूर्ति बाधित हो जाती है। इस प्रकार पर्यावरण की समस्याओं के निराकरण तथा पर्यावरण सुधार की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए अपेक्षित जन-सहयोग प्राप्त करना आवश्यक है। जब तक जन-जन का सहयोग प्राप्त नहीं होगा, तब तक पर्यावरण की सुरक्षा व इसके दुष्परिणाम को रोक पाना सम्भव नहीं है। बढ़ता हुआ शहरीकरण, जिसमें अत्यधिक वाहनों के प्रयोग, उद्योग आदि से निकलने वाले खतरनाक धुएं में कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, लेड तथा घरों के रेफ्रिजरेटरों से क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFC) तथा बढ़ती हुई जनसंख्या से कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा ने हमारे पर्यावरण को बहुत अधिक प्रदूषित किया है, जिससे श्वास सम्बन्धी समस्या तथा त्वचा सम्बन्धी समस्या बहुत तेजी से बढ़ रही है।

समताप मण्डल (Stratosphere) में पायी जाने वाली ओजोन परत में छिद्र बढ़ता जा रहा है, जिससे सूर्य की पराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी पर आना प्रारम्भ हो गई हैं। अगर यह स्थिति बनी रही तो समस्त मानव जीवन के साथ-साथ पारिस्थितिकी तंत्र में रहने वाले समस्त जीव-जन्तु सभी सूर्य की ज्वलंत किरणों की चपेट में आ जाएंगे तथा अब तक के हुए विकास को भारी क्षति पहुँचेगी। साथ ही, आने वाली हमारी पीढ़ी का इस तरह के समाज में श्वास लेना भी सम्भव नहीं होगा। हमें हमारी पीढ़ी के सकुशल जीवन-यापन की रक्षा का दायित्व भी सम्भालना होगा, नहीं तो आने वाला समाज एक "प्रदूषित समाज" तथा आने वाली पीढ़ी "प्रदूषित पीढ़ी" कहलाएगी और यह संज्ञा हमारे द्वारा ही दी जाएगी। यदि हमने अपने अन्दर पर्यावरण की सुरक्षा का दायित्व नहीं जगाया तो इस प्रदूषित पर्यावरण से हमारी सुरक्षा कर पाना असम्भव होगा।

वैज्ञानिकों के अनुसार देश में 33% वनों की आवश्यकता होती है, परन्तु वर्तमान में हमारे देश का कुल वन और वृक्षों से भरा क्षेत्र 80.9 मिलियन हेक्टेयर है जो देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 24.62% है। आज मानव का सिर्फ प्राकृतिक वातावरण ही नहीं, बल्कि सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है, जिससे नैतिक मूल्यों का तेजी से ह्रास हो रहा है। मानव के बीच पाया जाने वाला सामाजिक सम्बन्ध सिर्फ दिखावे का रह गया है। वास्तव में मानव सामाजिक सम्बन्धों का वास्तविक अर्थ भूल गए हैं तथा दिखावे की दौड़ में "नैतिक सम्बन्ध" को भूलते जा रहे हैं। आज का मानव अपनी स्वार्थपरक दौड़ में मानव कल्याण की अवधारणा को भूलता जा रहा है। हमारे सामाजिक व सांस्कृतिक पर्यावरण का मानव के जीवन में कितना अधिक महत्व है, इस बात का मानव को ध्यान ही नहीं है। वह अपने प्राकृतिक वातावरण के साथ-साथ सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण को बिगाड़ रहा है, जिसके कारण मानव स्वार्थ को बढ़ावा देने के साथ-साथ भौतिक सुख-सुविधा

के साधनों को प्राप्त करने की होड़ में भ्रष्टाचार, बेईमानी, बड़ों व छोटों का अपमान तथा खुद के लाभ के बारे में सोचने की संकीर्ण मानसिकता ने आज मानव को एक सीमित दायरे में बाँध दिया है। इससे वह भविष्य में होने वाली घटनाओं को भांप नहीं पा रहा है और यही संकीर्ण विचारधारा मनुष्य को एक ऐसी दुनिया में ले जाएगी जहाँ मनुष्य एक ऐसी संस्कृति देखेगा जो न समाज हित में होगी और न ही राष्ट्र हित में होगी। अतः मनुष्य अपने अविवेक के कारण इस नैतिक समाज को कब खो देगा, उसे पता ही नहीं चलेगा और एक नए समाज, जो "प्रदूषित समाज" होगा, उसकी ओर बढ़ता चला जाएगा तथा एक दिन अपनी "प्रकृति माँ" को खो देगा जिसकी छत्र-छाया में इसका पालन-पोषण हुआ है।

इस प्रकार, यदि मानव ने प्राकृतिक पर्यावरण के साथ-साथ सामाजिक व सांस्कृतिक पर्यावरण के बारे में गम्भीरता से विचार नहीं किया तो इसके दुष्परिणाम उसकी आने वाली पीढ़ी को भुगतने होंगे। सम्पूर्ण विश्व इस विकराल समस्या के प्रति गम्भीर है, जिसके निराकरण के लिए नित्य नए-नए कॉन्फ्रेंस आदि आयोजित किए जाते हैं; परन्तु पर्यावरण का मुद्दा केवल कागजों तक ही सीमित रह जाता है। पर्यावरण के समाज पर दुष्परिणाम तो दिख ही रहे हैं, परन्तु यदि इसे रोका नहीं गया तो हमारी कल्पना से इतर इसके परिणाम देखने को मिलेंगे। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्राकृतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पर्यावरण में संतुलन बिठाया जाए, तभी एक नए समाजवादी राज्य की परिकल्पना सम्भव है, क्योंकि सभी का जीवन स्तर स्वच्छ पर्यावरण में ही सम्भव है। सामाजिक एकता बनी रहे, उसके लिए हमें हमारे सामाजिक पर्यावरण को सुरक्षित रखना होगा और इसके लिए नैतिकता को अपने जीवन में प्रमुख स्थान देना होगा तथा पूर्वजों द्वारा सौंपी गयी संस्कृति की रक्षा करनी होगी; वरना हमारी संस्कृति, जो अभी मृत्युशय्या पर लेटकर अपनी अन्तिम श्वास ले रही है, वह कब समाप्त हो जाए, किसी को आभास तक नहीं होगा। आज मानव तार्किक क्रिया पर इतना अधिक जोर देने लगा है कि वह नैतिक क्रिया को नजरअंदाज किए जा रहा है, जिससे समाज में अलगाव की स्थिति पनप रही है। सामाजिक अन्तःक्रिया अब केवल प्रतीकात्मक अन्तःक्रिया में बदल रही है, शक्ति के स्रोतों से वर्ग संघर्ष को बढ़ावा मिल रहा है तथा इस प्रकार की अनैतिक स्थितियाँ समाज के लिए घातक सिद्ध होती जा रही हैं।

आगे आने वाली पीढ़ी असुरक्षित है, इस बात पर ध्यान देने की आवश्यकता सिर्फ सरकार को ही नहीं है। जन-जन को इस प्रदूषित पर्यावरण से अपने समाज की तथा प्रकृति की रक्षा करने के लिए कदम-से-कदम मिलाकर चलना होगा। हमारी प्रकृति एक प्याज की तरह है, जिसे जितना परत-दर-परत हटाते जाएंगे, यह आँखों को भिगोती जाएगी; ठीक उसी प्रकार हमारी प्रकृति को जितना खोखला करते जाएंगे, यह हमें भी छलनी करती जाएगी। इसमें वनों की कटाई, ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीनहाउस गैस का प्रभाव, पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करने वाली मानवीय गतिविधियाँ, नए शहरों और बांधों का निर्माण तथा अधिक जनसंख्या के साथ-साथ पाश्चात्य संस्कृति का भारतीय संस्कृति में पदार्पण भी शामिल है। ऋग्वेद में यह संकेत है—

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे।

प्र ण आयूंषि तारिषत् ॥ (ऋग्वेद- 10.186.1)

अर्थात्, याद रखो कि शुद्ध ताजी हवा अमूल्य औषधि है जो हमारे हृदय के लिए दवा के समान उपयोगी और आनंददायक है, जो इसे प्राप्त करता है उसकी आयु बढ़ती है।

लुईस थॉमस ने अपनी पुस्तक 'The Lives of a Cell' में धरती को एक जीवित कोशिका (Living Cell) कहा है और इसके चारों ओर के वातावरण को उसकी रक्षा का एक पर्दा बताया है। यह रक्षा कवच पर्यावरण है जो धरती की सतह के ऊपर हवा को रोके रखने में सहायता करता है।

वर्तमान में हमारी सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण प्रदूषण है क्योंकि औद्योगिकीकरण, नगरीकरण तथा तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप आज सामाजिक दशाएं परिवर्तित हो रही हैं। जहाँ समाज एक तरफ विकास की प्रक्रिया में आगे बढ़ रहा है, वहीं सामाजिक संस्थाओं तथा मानव स्वास्थ्य पर इसका दुष्प्रभाव भी बढ़ रहा है क्योंकि पर्यावरण और मानसिक स्वास्थ्य

का सम्बन्ध बहुत ही गहरा होता है। हम जिस वातावरण में रहते हैं उसमें प्राकृतिक व मानव-निर्मित दोनों तरह के वातावरण शामिल हैं। प्रकृति में समय बिताना, जैसे पार्क, जंगल या बगीचे जैसी हरी-भरी जगहों पर जाना, मस्तिष्क पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। प्रकृति के बीच प्रकृति से बात-चीत करने से तनाव कम होता है, शक्ति और आराम की भावना बढ़ती है तथा स्वास्थ्य में भी सुधार होता है। प्राकृतिक वातावरण के संपर्क में आने से संज्ञानात्मक व रचनात्मक कार्यों तथा एकाग्रता में भी सुधार होता है और अवसाद जैसी बीमारियों से छुटकारा मिलता है। हमारा भौतिक वातावरण जैसे— हमारा घर, कार्यस्थल या समुदाय, हमारे मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। वायु-प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, जल प्रदूषण आदि कारक तनाव, चिड़चिड़ापन तथा मनोवैज्ञानिक संकट को बढ़ा सकते हैं। पर्यावरणीय घटनाएं, जैसे प्राकृतिक आपदाएं (तूफान, भूकम्प, बाढ़, चक्रवात) या मानव-निर्मित आपदाएं (औद्योगिक दुर्घटनाएं आदि) भी मानव जीवन के लिए खतरा बनती जा रही हैं। अगर इस भयावह स्थिति को रोका नहीं गया तो सम्पूर्ण मानव जीवन खतरे में पड़ जाएगा, जिससे मानव के स्वास्थ्य पर तो बुरा असर पड़ेगा ही, साथ ही समुदायों के बीच सामाजिक संपर्क भी टूटने लगेंगे जिससे सामाजिक संबंध बिगड़ने लगेंगे। आज मानव-निर्मित वातावरण इस कदर खतरे में है कि उसकी कल्पना करना भी असम्भव है।

अतः प्राकृतिक वातावरण के साथ-साथ सामुदायिक वातावरण को भी स्वस्थ रखने की आवश्यकता है क्योंकि सामुदायिक वातावरण के स्वस्थ रहने से सामाजिक संबंधों में अपनेपन की भावना बनी रहती है, जिससे मानसिक संबंध और अधिक मजबूत होते हैं। मानसिक संबंधों की मजबूती के लिए प्रकृति को स्वच्छ व स्वस्थ रखना आवश्यक है क्योंकि प्रकृति स्वस्थ रहेगी तभी मानव जीवन स्वस्थ रहेगा, और मानव जीवन स्वस्थ रहने से सम्पूर्ण सामुदायिक वातावरण स्वस्थ रहेगा जिससे मनुष्य तनावमुक्त रहेगा और वह संबंधों को अधिक गहराई से समझेगा जिससे सामाजिक संरचना व्यवस्थित रहेगी; जो समस्त मानव जीवन के कल्याण के लिए जरूरी है। हमारा परिवेश हमारे समग्र जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम जिस वातावरण में रहते हैं, वह हमारे स्थान और पहचान की भावना को भी प्रभावित करता है। प्राकृतिक और मानव-निर्मित पर्यावरण से हमारा लगाव हमारी व्यक्तिगत पहचान, सांस्कृतिक विरासत और किसी विशेष समुदाय या परिदृश्य से संबंधित होने की भावना को आकार दे सकता है। वातावरण के साथ सकारात्मक संबंध तथा अपने आस-पास के वातावरण से लगाव की भावना से जन कल्याण में वृद्धि हो सकती है। आज प्रकृति में इतना असंतुलन इसीलिए है क्योंकि मानव अपने लाभ के लिए इतना अधिक स्वार्थी हो गया है कि उसको आने वाली पीढ़ी की समस्याओं पर ध्यान ही नहीं है। आज का मानव सिर्फ व्यक्तिगत स्वार्थ के प्रति चिंतित है, उसके अन्दर जन कल्याण की कोई भावना नहीं है। अपने निजी स्वार्थ के कारण वह प्रकृति का लगातार दोहन किए जा रहा है, जिसके कारण प्राकृतिक तथा मानव-निर्मित परिवेश दोनों के बीच संतुलन बिगड़ता जा रहा है। अतः इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य को प्राकृतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पर्यावरण के प्रति अपनी संकीर्ण मानसिकता को बदलना होगा और इसके लिए उसे एक नई विचारधारा को जन्म देना होगा जो मानव कल्याण के प्रति समर्पित हो तथा जिससे हमारा वातावरण शुद्ध हो सके। इसके लिए मानव को एकजुट होकर विवेक के साथ प्रकृति की रक्षा के लिए कदम-से-कदम मिलाकर आगे बढ़ना होगा, तभी वातावरण के दुष्प्रभाव को मनुष्य के सांसारिक जीवन तक पहुँचने से रोका जा सकता है।

निष्कर्ष

मानव द्वारा प्राकृतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि मानव की गतिविधियां एवं हस्तक्षेप सभी क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव डालते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण पर मानव गतिविधियों के कारण पेड़-पौधे, जीव-जन्तु आदि का जीवन खतरे में है। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता की भी हानि हो रही है। सामाजिक पर्यावरण में मानव हस्तक्षेप के कारण असमानता, असमर्थता तथा सामाजिक विषमता बढ़ रही है। सांस्कृतिक पर्यावरण में मानव गतिविधियों के कारण सांस्कृतिक विरासत की हानि हो रही है। अतः इन सभी क्षेत्रों में अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकलकर आता है कि मानव गतिविधियों के कारण जैव विविधता की हानि हो रही

है जो हमारे पारिस्थितिकी तंत्र और सांस्कृतिक पहचान को भी प्रभावित कर रही है। इसके कारण समाज के विभिन्न वर्गों के बीच तनाव और संघर्ष की स्थिति बनी हुई है।

सुझाव

1. हमें प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते समय उनकी स्थिरता एवं संरक्षण का विशेष ध्यान रखना चाहिए।
2. जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने के लिए हमें अपने दैनिक जीवन में सकारात्मक बदलाव करने होंगे।
3. सामाजिक असमानता एवं असमर्थता को कम करने के लिए हमें प्रभावी सामाजिक नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करना चाहिए।
4. हमें अपनी सांस्कृतिक परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित करना होगा तथा अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखना होगा।

भविष्य की दिशा

मानव को अपने प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनने की आवश्यकता है। मानव को अपनी गतिविधियों को ऐसा बनाना होगा जिससे प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण का संरक्षण हो सके। इस तरह हम स्थायी एवं समृद्ध भविष्य की दिशा में बेहतर कार्य कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ (References)

1. कुमारी, मीनाक्षी। "पर्यावरण का सामाजिक जीवन पर प्रभाव।" *International Journal for Environmental Rehabilitation and Conservation*, vol. 5, no. 2, 2014, pp. 23-28.
2. किरण, जय (प्रोफेसर डॉ.)। "पर्यावरण और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य।" *International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)*, vol. 3, no. 2, Sep. 2023, pp. 112-118.
3. खान, अख्तर। "मानव जीवन और पर्यावरण प्रदूषण।" *International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)*, vol. 5, no. 3, 2023.
4. त्रिपाठी, आर. के. (डॉ.)। "पर्यावरण का मानव समाज पर प्रभाव।" *The International Journal of Advanced Research in Multidisciplinary Science (IJARMS)*, vol. 4, no. 1, Jan. 2021, pp. 45-52.
5. मीना, मनोज कुमार (डॉ.)। "पर्यावरण का स्वास्थ्य पर प्रभाव।" *International Journal of Advanced Research in Multidisciplinary Social Sciences*, vol. 9, no. 4, April 2019.
6. "Mental Health and Well-being." *Copernicus Health Hub*, Copernicus, 2026, <https://health.hub.copernicus.eu/mental-health-and-well-being>.
7. जोशी, प्रीता। *विकास प्रशासन (Vikas Prashasan)*. RBSA Publishers, 2023.
8. सुलेमान, और प्रवीण राय (डॉ.)। "मानव-पर्यावरण संबंध का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव: एक भौगोलिक अध्ययन।" *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT)*, vol. 9, no. 5, May 2021, pp. 104-115.